रामताल का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महात्म्य

डा0 बीरेन्द्र कुमार*

उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद, में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–02 पर छटीकरा–सेही मार्ग (गरूण गोविन्द मन्दिर मार्ग) पर ग्राम रामताल स्थित है। ग्राम से लगभग 500 मी0 पूर्व दिशा में 77 38 पूर्वी देशान्तर एवं 27 34 उत्तरी अक्षांश पर रामताल पुरास्थल स्थित है। यहाँ से दक्षिण दिशा में लगभग 3 कि0मी0 दूर वृन्दाबन रोड स्थानीय रेलवे स्टेशन स्थित है । यहाँ तक पहुँचने के लिये ग्राम हटीकरा अथवा वृन्दावन रोड तक उत्तर प्रदेश, हरयाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली परिवहन निगमों की बसों द्वारा पहुँचा जा सकता है। यहाँ से 1 कि.मी. पूर्व दिशा में वृदावन के प्रसिद्व स्कॉन मन्दिर एवं प्रेम मन्दिर स्थित है। पहिंचान हेतु पुरास्थल क्षेत्र पर प्राचीन पुष्करणी एवं सड.क के मध्य विशाल बट एवं वोधि (पीपल) वृक्ष विद्यमान है।

सुना है कि मुगल बादशाह अकबर (1556–1605ई.) ने जब तानसेन का राग सुना तो बादशाह ने तानसेन से तानसेन के गुरू हरिदास के विषय में जाना तो उनके गुरू हरिदास को बादशाह के बुलाने पर दरबार में बुलबाया । बुलाबे के जबाब में वृन्दाबनवासी प्रसिद्व सन्त एवं तान सेन के गुरू हरिदास ने बादशाह के लिए कहला भेजा कि सन्त जन किसी बादशाह के दरबार दर्शन के आकाक्षी नही होते है। सन्त हरिदास के इस विचार को जान स्वयं बादशाह ने सन्त के दर्शन हेतु दिल्ली से वृदावन का रूख किया । बादशाह अकबर तत्कालीन शेरशाह सूरी मार्ग (रास्ट्रीय राजमार्ग सं0 2) का अनुसरण कर वृन्दाबन की ओर चला, तो वृन्दावन से लगभग 15 कि0मी0 पहिले किसी छोटी ग्रामीण बस्ती के समीप मार्ग के किनारे बादशााह ने अपने लश्कर सहित विश्राम किया। बादशाह के उसी विश्राम स्थल पर वर्तमान अकबरपुर ग्राम स्थित हैं, जो कि बादशाह अकबर के वहाँ पर विश्राम किऐ जाने की स्मृति में अभी भी स्थित है। वर्तमान ग्राम अकबपुर से बादशाह जैंत ग्राम तक तो शेरशाह सूरी मार्ग से ही चला। जैत ग्राम से शेर शाह सूरी मार्ग में से अकबर के काल में वृन्दावन के लिऐ ग्राम रामताल व ग्राम सुनरख होते हुऐ वृन्दावन जाने के लिऐ एक सीधा एंव लधु मार्ग था। जो कि नाले के किनारे–किनारे अपनी जीर्णावस्था में आज भी विद्यमान है। जैत से वृन्दावन के लिऐ बादशाह ने इसी मार्ग का अनुसरण किया था। यहाँ से 2–3 कि0मी0 आगे चलकर बादशाह ने पहले से ही विद्यमान पुष्करणी में अपने घोडों को पानी पिलाया तथा पुष्करणी के समीप कुऐं के जल से अपने को एवं अपने सिपहसलारों को तरोताजा किया। पुष्करणी एंव कुऐ के मध्य उस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्थल मार्ग विद्यमान था, जो हिमालय पर्वत पर जाकर चीन से रोम को जाने वाले प्राचीन रेशम मार्ग में मिलता था। पश्चिम में वह मार्ग पवैया (ग्वालियर,) वेसनगर,विदिशा,उज्जैन,पैठन होते हुऐ पश्चिमी समुद्र में जाकर मिलता था बादशाह अकबर के समय तक भी इस मार्ग से बहुतायत व्यापारिक कारवाँ गुजरते थे। पुष्करणी स्थल पर बादशाह कुछ विश्राम के पश्चात अपने लश्कर को यहीं छोड. सन्त हरीदास के दर्शन हेतु पैदल उनके आश्रम,जो कि वृन्दावन में था , को पहुँचा। सन्त के दर्शन के पश्चात बादशाह पुनः पुष्करणी पर वापिस पहुँचा। पुष्करणी की भव्यता एवं रमणीकता को ध्यान में रखकर तथा यात्रियों की सुविधा के लिऐ बादशाह ने अपने बजीर एवं मनसबों को जैत वृन्दावन उप मार्ग पर पुष्करणी के समीप एक कुऐ के निर्माण एवं एक आरामबाग के रोपण हेतु हुकुम दिया। इसके पश्चात बादशाह हिमालय से पश्चिम समुद्र को जाने वाले मार्ग का अनुसरण कर मथुरा में वहाँ पहुँचा जहाँ शेरशाह सूरी मार्ग में जाकर वह मिलता था। वहाँ से बादशाह आगरा फतेहपुर सीकरी चला गया।

बाद में बादशाह अकबर के हुकुम के अनुपालन में अकबर के मनसबदार ने पुष्करणी के पश्चिम दिशा में एक बाग रोपित करवाया। बाग के चतुर्दिक रक्षा प्राचीर (रौस) बनवायी गयी। उसमें चारों कोणो पर चार बुर्ज बनवायें गये। बाग के दक्षिण–पूर्व कोण पर रक्षा प्राचीर के बाहर तथा जैत वृन्दाबन मार्ग पर एक सदानीरा कुआं निर्मित करवाया, जिससे यात्री पानी पी सकें तथा नव रोपित आरामबाग की सिंचाई की जा सके। दुरसंयोग से कुऐ का जल खारी निकल गया। जो कि पीने योग्य नही था।

* अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,बुद्व पी0जी0 कालेज, कुशीनगर

नवरोपित बाग की सिंचाई समस्या के समाधान हेतु पुष्करणी के दक्षिण पूर्व कोण से लगभग 100 मी. दूर हिमालय से पश्चिमी समुद्र मार्ग को जाने वाले मार्ग पर एक दूसरा कुँआ निर्मित करवाया गया। दुरसंयोग से वह भी खारी निकल गया। इस प्रकार से अन्ततः पुष्करणी के उत्तर–पूर्व दिशा में विधमान सदानीरा कुआँ ,जो कि पहले से विद्यमान था, से नव रोपित बाग की सिंचाई का प्रबंध किया गया। आगे चलकर रोपित बाग आरामबाग कहा जाने लगा और उसके समीप प्राचीन काल से ही रमणीक पुष्ककरणी आरामताल कही जाने लगी। स्वतंत्रता के पश्चात भारत पाकिस्तान अलग–अलग दो देश बने। विस्थापन के समय दिल्ली–आगरा के मध्य देहातो में बसने वाले मुस्लमानों को पाकिस्तान जाने के लिये विवश किया गया। तथा मुस्लमानों की सम्पतियों को अपहृत कर लिया गया। मुसलमान स्मारकों के नामों का रामचरित मानस के प्रचार के क्रम में हिन्दूकरण किया गया। बाबर द्वारा आगरा में यमुना तट पर रोपित आरामबाग का नाम जिस भाँति रामबाग कर दिया गया ठीक उसी भाँति इस आरामबाग को भी रामबाग कहा जाने लगा, जबकि पुष्करणी का हिन्दूकरण इससे पूर्व मुगलों के उत्तरार्ध काल में रामताल के रूप में किया जा चुका था। हिन्दूवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आज अलीगढ को हरिगढ कहकर प्रचारिता कर रहा है। हो सकता है जैसे पुष्ककरणी से रमताल हो गया और आरामबाग से रामबाग हो गया वैसे ही अलीगढ से हरिगढ हो सकता है। भक्ति कालीन कवि जगतनन्द ने अपने ग्रन्थ ब्रंजबस्तु वर्णन में इस क्षेत्र के 169 प्राचीन कुण्डो एंव दो तालों का इस प्रकार से वर्णन किया है–

उनसठ उपर एक सौ, सिगरे ब्रज में कुंड।
चौरासी कामा लखौ, पचहत्तर ब्रज झुंड।।
औराहिं कुंड अनेक हैं, ते सब नूतन जान।
कुंड पुररातन एक सौ, उनसठ उपर मान।।
दोई ताल ब्रज बीच हैं, रामताल लखि लेहु।
और मुखारी ताल है। जगतनन्द करि नेहु।।

उन्नीसवी सदी के प्रारम्भ में ग्राम अकबरपुर निवासियों ने प्राचीन पुष्करणी एवं उस समय के रामताल के समीप की बंजर भूमि एवं बनखण्डी को खाली जान कर उसमें अपने ग्राम को बसा लिया तथा रामताल के नाम पर नवस्थापित गांव का नाम नगला रामताल रख लिया, जो प्राचीन पुष्करणी एवं वर्तमान रामताल के लगभग 500 मी0 पश्चिम में आज भी ग्राम रामताल के नाम से स्थित हैं। जिस समय नगला रामताल की स्थापना हुई उसी समय के आसपास ग्राम रामताल से वृन्दावन मार्ग पर, मार्ग एवं रामताल जलाशय के मध्य अर्थात रामताल के दक्षिणी तट पर किसी अनजान उपकारी ने एक संकरे कुएं का निर्माण करवाया, जिसके पेय जल का उपयोग ग्राम रामताल निवासी इसके सूख जाने तक करते रहें। जैंत ग्राम एवं आसपास के ग्रमों के वृन्दावन नगर को दूध वेचने वाले दूधिये भी अन्य राहगीरों की भाँतिं इस ताल एवं कुऐं का उपयोंग करते थे। उन दूधियों में से किसी एक ने ताल एवं कुऐं के समीप बट पैाधे को रोपित कर दिया। वृन्दावन नगर में दूध बेचकर लौटकर दूधिये कुए पर अपने अपने खाली दूग्ध पात्रों (दूध के पीपों) को नियमित धूलते थे तथा धुलावन के दूग्ध मिश्रित जल को ठीक उसी तरह नियमित वट पौधे पर ढालते जैसे सूर्य उपासक श्रद्वालू प्रातः स्नान के पश्चात सूर्य को अर्ध्य के रूप में जल का लोटा ढालते है। दूधियों द्वारा इस प्रकार के श्रद्वा सिंचन को पाकर नवरोपित वट पैाधा सीघ्र ही विशाल वट वृक्ष के रूप में परणित हो गया । वट वृक्ष एवं कुऐं के मध्य एक पीपल पौधा भी वृक्ष वन गया। बट एवं बोधि (पीपल) वृक्ष अव भी विद्यमान है। आज से दस वर्ष पुर्व तक भी बादशाह अकबर के समय में रेापित आरामबाग की लाखौरी (ककइया) ईंटों से निर्मित रक्षा प्राचीर का वहुतायत भाग तथा अकबर के समय में निर्मित किये गयें दोनों खारी जल के कुऐं विद्यममान थें। रक्षा प्राचीर के अधिकांश भाग को आसपास के ग्रामीण सार्वजिनिक उपयोग हेतु तोड. ले गयें तथा दोनों कुओं को भू. स्वामियों द्वारा वन्द (अटादिया गया) कर दिया गया है। जिन्हें सावधानी से खोजा जाय तो वे आज भी धरती में दवे मिलेगें।

बीसवीं सदी के 80 के दशक तक आसपास के रामताल, जैत, छटीकरा,, दोनों गोपालगढ तेहरा, बुर्जा, सुनरख, कीकी नगला, दोनो अटस, नरायनपुर, नगला सुम्मेरा आदी ग्रामों का पशुधन समीप की वन भूमि (जंगलात) एवं टीलों में चरता था तथा रामताल में पानी पीता था। उनके चरवोहे ग्वाल–बाल

वट वृक्ष पर चड. एवं उसकी लटों से कूद कर ब्रज के पौराणिक भगवान कृष्ण की स्मिृमि में गुल्ली दण्डा (कलाई दण्डा) का सारे दिन खेल खेलते थे। अवसर पाते ही रामताल में कूद जाते और अपने निरवास्त्र शरीर पर कीचड.लपेट अपने को अनपहचान कर वृन्दावन से परिक्रमा अथवा दर्शन करके लौटने वाली श्रद्वालु स्त्रियों को भगवान कृष्ण के अनुकरण पर उनके द्वारा वृन्दावन शहर से क्रय करके लायें खाद्य पदार्थो को लूट लेते थें तथा उनके चले जाने पर रामताल में स्नान कर कीचड. को साफ कर कपडे. पहन मालेगनीमत का आनन्द पूर्वक सामूहिक सेवन करते थे । इस अनन्द के लालच में तरूण किशोर विद्यालय से घन्टा गोल (बंकमार) कर रामताल पर खेल–कूद कर के अपने–अपने घर लौट जाते। इसके पीछे उनका मानना था कि भगवान कृष्णा भी तो ऐसे ही करते थे। बुजुर्ग चरवाहे भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं को सुनाते और कहते जो बालक बचपन में अपने घर या पडौसी के घर से खाद्या सामानो की चोरी करके खाते है। उनका स्वास्थ अच्छा हो जाता है। क्यों कि माता –बहनों के देने से तो खाद्य को नजर लगजाती है। इस लियें दिया हुआ खाद्य स्वास्थ्य वर्धक नही होता। भगवान कृष्ण इसी लिये ग्वाला–बालो सहित चोरी करके खाते थें तथा बडे.–बडे राक्षसो का बाल आवस्था में ही बध कर देते थे।

बुजुर्ग चरवाहों के इसी गूढ ज्ञान का अनुसंरण कर किशोर अपने दोस्त मित्रों को चोरी से घर बुलाते, दादी की मिटटी की हाँडी से जमे हुऐ घी को ढेले की तरह एक हाथ में लेते तथा दूसरे में गुड. का टुकडा. लेते आौर बस फिर क्या दादी का दस लीटर दूध प्रातः से दोपहर तक अँगीठी में ही रखा रहता था, जिसका रंग भी अधिक देर तक उबलने से कुछ लाल रंग का हो जाता था। दूध के उपर मोटी जारी (मलाई) जमचुकी होती थी। बस पूरी हाँडी. मैं जौ की नली डाली और घी गुड. के साथ पी गयें। दोपहर बाद दादी ने देखा तो दूध के उपर की जारी (मलाई) सुरक्षित जमी है। कोई चोरी करता तो दूध के उपर की जारी (मलाई) अवश्य क्षति ग्रस्त हो जाती। बस दादी ने अनुमान कर लिया कि दूध की हाँडी आग पर अधिक देर तक रखी रही, जिससे दूध जल कर हाँडी में कम हो गया, जो कोई इस भेद को खोलता, उसे भगवान कृष्ण की ओर से पाप लगता, जिसके चलते भेद खोलने वाला किशोर कृष्टिाकाय एवं रूग्णता को प्राप्त होता। फिर क्या रामताल से प्राप्त गूढँ ज्ञान से किशोर, पीढी दर पीढी सेहत बनाते रहें, जब जिसका दाव लगता वही अपने सहचरवाहे की गाय अथवा भेंस का दूध दोह लेता तथा आरामबाग में विद्यमान सुरजइया (सिहोर) वृक्ष का अर्क दूध में ढालता और दस पन्द्रह मिनट में दूध से मदर डेरी जैसी दही तैयार करके वट वृक्ष के पत्तो से दोना बना, पक्तिबद्व बैठ सामूहिक रूप से दोनों में दही ढाल के खाते। सायं को संबधित गाय या भैंस घर के मालिकों द्वारा दोहने पर काम दूध देती तो कहा जाता कि सम्बन्धित गाय या भैस के बच्चे को उससे दूर रखा जाय। क्योंकि वह दिन में दूध को पी जाता है।

पूर्वांकित 10–15 ग्रामों का पशुधन रामताल जलाशय के समीप की भूमि में चरता तथा विद्यमान वृक्षो की छाह में मई जून की तपन में जुगाली करता। दोपहर वाद जब धूप कम हो जाती तो पुनः जंगल में जाने से पहले उठकर ऐंड. लगाता और पूछ उपर कर गोबर त्याग करता, जिसे आसपास के ग्रमों की गरीब महिलाऐं एकत्रित कर उपले बनाती। इस प्रकार से सूखे उपलों का ढेर लगा लेती तथा आठ दिन के उपलो को तांगों में भरकर वृन्दावन बाजार में विकवाकर अपनी रोजी रोटी चलाती थी। उन गरीब महिलाओं के घर के पुरूष समीप के जंगल से लकडी. के गठठर बनाकर रामताल के तट पर रख देते थे। प्रातः सीध्र उठकर उन लकडी. के गठठरों को वृन्दावन बाजार बेचकर पुनः रामताल पर वापिस आते, तो उनके घर की महिलाऐं उनके लिऐं दोपहर का भोजन लाती। पुरूष रामताल के वृक्षों की छाया में बैठ दोपहर का भोजन कर कुऐं का पानी पीकर आगले दिन के लियें लकडी. के गठठर बनाने के लिऐ निकल पढते। संध्या वक्त जब वे अपने–अपने लकडी. के गठठरों को लेकर रामताल पर पहुँचतें तब तक उनके घरो कि महिलाऐं भी गोबर एकत्रित कर उपले बना चुकी होती थी तथा वे अपने–अपने घरों के पुरूषों के साथ संध्या को अपने–अपने घर वापिस होती थी। प्रातः पुनः दैनिक रूप से पुरूष वृन्दावन बाजार गठठर बेचने जाते और दोपहर को पुनः उन पुरूषों के घरों की महिलाऐं दोपहर का खाना लेकर रामताल पर पहुँचती थी। पती पत्नी साथ–साथ दोपहर का खाना खाते और उसके पश्चात दोनों ही अपने अपने कार्यों में दैनिक रूप से ब्यस्त हो जाते थे।

संध्या को चरवाहे ग्वाल बाल अपने अपने पशुधन को लेकर दैनिक रूप से अपने अपने ग्रामों को रात्रि विराम वापिस हो जाते थे। गोबर एकत्रित कर उपले बनाने वाली महिलाऐं तथा उनके घरों के लकडी. के गठठर बेचने वाले पुरूष भी रात्रि विराम हेतु अपने अपने घर आजाते थे । रात्रि होने से पूर्व जंगली जन्तु जानवर जो दिन में मानव भय एवं दिन के उजाले में रामताल पर नही आ सकते थें। वे रामताल में पानी पीते थे तथा शिकार करते थे। इसके पश्चात रात्रिभर के लियें रामताल चकोरों सें भर जाता था। चकोर रामताल में तैरते क्रीडा. करते तथा इतना शोर करते थे कि रात्रि विलम्ब से आने वाले राहगीरों को डरा देते थे। प्रातः दिन निलकलने से पहले जंगली जन्तु, जानवर रामताल में पानी पी.पी कर, अपनी –अपनी भाटों, विलों तथा विश्राम जगहों में छिप जातें थे एवं प्रातः बेला में रामताल में स्नान के पश्चाात जाने अनजाने साधक साधाना करते। इसके पश्चात आसपास के ग्रामों के वृन्दावन मथुरा नगरों में दूध बेचने वाले दूधिये रामताल पर पहुँच चोरी से रामताल के जल को दूध में मिश्रित कर दूध के भाव बेचते थे । यह बात दूसरी है कि जब दूधियों द्वारा अपने पीपे का दूध हलवाई के भगौने में उडेला जाता था तो उसमें कभी कभार रामताल की मैंढकी तैरती देखी जाती थी। इसके पश्चात रामताल जलाशय एवं इसके समीप के वृक्ष एंव उनकी छाया दैनिक रूप से आसपास के ग्रमों के बुजुर्ग एवं तरूण चरवाहे ग्वाल–बालों की दिन भर के लिये लीला स्थली, क्रीडा स्थली एंव विश्राम स्थली बना रहता। इसी प्रकार से ग्राम रामताल की साझा धरोहर रामताल पुष्करणी का चौबीसों पहर साझा एवं सामुदायिक उपयोग सदियों से होता चला आ रहा है।

भारतवर्ष में बीसवीं सदी के अस्सी के दशक में देश एवं राज्यों के स्वास्थ्य विभागों द्वारा जलाशयों एवं खुले कुओं के जल को पीने के अयोग्य प्रचारित किया गया और प्रचारित किया गया कि जलाशयों एवं खुले कुओं के जल को पीने से बीमारियां फैलती हैं। इस लिऐ इनके जल का उपयोग पीने के लिये न किया जाय। इसके पश्चात प्रायःजलाशय एवं कुऐ देश भर में उपेक्षित होने लगे उपर से वर्षा भी कम होने लगी, जिससे सदानीरा जलाशयों एवं कुओं के साथ–साथ रामताल एवं उसके आपपास के कुऐं भी सूख गये। इतना ही नही सन 2000 ई0. के आप पास रामताल जलाशय में एक दो वर्ष खेती भी कर ली गयी। ऐसी अवस्था में वृन्दावन के आसपास के भूमि क्रय विक्रय व्यवशायियों की नजरें रामताल जलाशय की मूल्यवान भूमि की ओर होने लगी । ग्राम रामताल के सामूहिक भय से जब भूमि क्रय विक्रय व्यवशायी रामताल की भूमि को न हाथिया सके, तो उन्होने तिकडम और भेद नीति के द्वारा ग्राम रामताल के निर्धन भूमिहीन वासिन्दों के नाम भूमिहीन पटटे, इस भूमि में इस प्रत्याशा में करवा दिये कि जब भी पटटेधारकों के पटटे संक्रमणी हो जायेगे तो वे उन्हे भूमि क्रय विक्रय व्यवशायियों को वैधानिक रूप से बेच देगे। शर्त ये भी रही कि नवभूमिहीन पटटों को संक्रमणी पटटों का रूप भूमि क्रय विक्रय व्यवशायी करवायेगे। ग्राम रामताल के वासिन्दों का इसमें कुछ भी लगना नही था । इस लिऐं लालच में आकर अपने ग्राम की साझा धरोहर को भूमि क्रय विक्रय व्यवशयियो को बेचने को तैयार हो गये। पुण्यस्थली रामताल के सुसंयोग से अगली पंचवर्षी में ग्राम सभा का एक ऐसा नौजवान प्रधान निर्वाचित हुआ, जिसका शैशव से लेकर जिम्मेदार वालिग होन तक का जीवन रामताल के तट पर खेलते कूदते बीता था। इस लियें वह रामताल को रामताल जलाशय के रूप में ही देखना चाहता था। भूमि क्रय विक्रय व्यवशायी एवं नवपटटे धारक जबतक प्रशासन को शिकायत करते और प्रशासन नींद से जागता तब तक तो उत्साही प्रधाान ने जे0सी0बी0 मशीन से रात और दिन में रामताल जलाशय की भूमि को जलाशय नही तो पोखर तो निश्चित रूप से बना दिया। जिससे भूमि क्रय विक्रय व्यवशायी पटटेभूमि का बार बार भूमि प्रशासन से मुआयना कराते तो मौके पर भूमि तालाब के रूप में ही मिलती, जिसके कारण भूमिहीन पटटे कभी भी संक्रमणी पटटों का रूप न ले सके। इस लिये वे पटटे बिक भी न सके और पटटा भूमि सनातन काल से लेकर वर्तमान तक तालाब के रूप में बनी रही। दूसरी तरफ संमन्वित समग्र ग्राम विकास एंव सृजन समिति रामताल भूमि क्रय विक्रय व्यवशयियों और पटटेधारको का विरोध समाज में एवं जिला प्रशासन से करती रही, जिसके चलते भूमि क्रय विक्रय व्यवशायियों की दुरयोजना चौपट हो सकी और प्राचीन रामताल पुष्करणी एंव इससे लगी भूमि ग्राम रामताल की साझा धरोहर वर्तमान तक बनी रह सकी।

समन्वित समग्र ग्राम विकास एवं सृजन समिति रामताल एवं ग्रामवासी सदैव से ही रामताल के जीर्णोध्दार के लिये प्रयासरत रहे तथा इस हेतु प्रशासन एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से सहयोग की माँग भी करते रहे। इसी प्रकार की माँग के चलते दि बृजफाउन्डेशन नाम की स्वयंसेवी संस्था ने भूस्वामी ग्राम रामताल निवासियों एवं ग्राम प्रधान से सम्पर्क कर ग्राम वासियों के स्वामित्व में रामताल जलाशय के जीर्णोध्दार का कार्य प्रारम्भ रक दिया और आश्वासन दिया कि जीर्णोध्दार के समय और जीर्णोध्दार के पश्चात भी रामताल के जलाशय एंव इससे लगी भूमि ग्राम रामताल के निवासियों की ही रहेगी तथा वे इसका पूर्व की ही भाँति सामुदयिक एवं सार्वजनिक उपयोग निर्वाध रूप से करते रहेंगे।

दि बृजफाउन्डेशन संस्था को यह सत्य जाानकारी हो गई कि रामताल जलाशय एवं इससे लगी भूमि की कीमत लगभग 40 करोड. रूपये है। इस सत्य को जानकर दि बृजफाउन्डेशन संस्था ब्रज क्षेत्र के लिये भारत में अंग्रेजी राज स्थापित करने वाली ईष्ट इण्डिया कम्पनी बन गयी है। संस्था प्रकट रूप से तो कुछ और कहती हैं और वास्तविकता में वह ब्रज के ऐसे तालाबों की मालिक बनती जा रही है। ग्राम जैत जिला मथुरा की सार्वजनिक पोखर के जीर्णोध्दार के नाम पर उसकी चारों तरफ से तार बाउन्ड्री कर दी गई है, जिसमें स्वयं के कर्मचारियों के निवास हेतु कैम्प कार्यालय के बहाने स्नानगृह, शौचालय,, रसोईघर, आवासीय कक्ष तथा उसके समक्ष बरामदा बना लिया है। जिसमें छदम रूप से संस्था के लोग निवास करते है। कहने को जैत ग्राम की पोखर में किसी दानदाता को फुस्लाकर नागदेवता का मन्दिर बनवा दिया है, जिसमें वर्ष में एक बार संस्था की ओर से मेला भी लगने लगा है। अब संस्था की योजना वहाँ दुकाने बनवाने की हैं, ताकि जैत ग्राम की सार्वजनिक साझा पोखर भूमि को व्यक्तिगत किया जा सके। तार बाउन्ड्री के अन्दर अन्य आदमी तो क्या स्वयं जैत ग्राम के निवासी भी स्वछन्दतापूर्वक नही जा सकते है, क्यों कि तार बाउन्ड्री के गेट पर चौकीदार रहते हैं, जो चाहे जिसको अन्दर नही जाने देते हैं। साथ ही परचितो को भी विना अनुमति नही जाने देते हैं।

रामताल पुष्करणी कुषाण राजाओं के समय में निर्मित की गयाी थी। जिसकी प्राचीनता आज से लगभग 2000–2100 वर्ष पुरानी है। इसलिये यह प्राचीनता एवं सांस्कृतिक दृष्टि से राष्ट्रीय धरोहर है, जो कि लगभग एक एकड. क्षेत्र में लगभग 2–3 मी0 चौडी पक्की ईटों से बनी दीवार से निर्मित है। दीवार की बुनियाद में लोहे की प्लेट लगी है, जोकि संस्था की अविशेषज्ञता के चलते स्थान स्थान से क्षति ग्रस्त हो चुकी है। पुष्करणी के उत्तर में प्राचीन राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित था। अतः उधर से ही पुष्करणी में प्रवेश हेतु पक्की ईटों का उतार (ढलान) बना हुआ था, जिसे अविवेकी संस्था ने पूरी तरह ध्वस्त कर खोद के फेंक दिया है। प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर रामताल पुष्करणी का सत्यानाश दि बृजफाउन्डेशन संस्था ने ठीक वैसे ही कर दिया हैं जैसे अंग्रेजी राज में कराची से लाहौर के मध्य रेल पटरी विछाते समय अग्रेज इन्जीनियर विलियम ब्रन्टल ने हडप्पा नामक पुरास्थल पर विद्यमान बुध्द के धातु अवशेषों से सम्पन्न पक्की ईटों से बने स्तूप को रेल की पटरियों के मध्य रोडे. डालने के लिये तुडवाया था। उसमें प्राप्त बुध्द के पवित्र धातु अवशेषों को फिकवा दिया था। इसी प्रकार से सम्राट अशोक द्वारा सारनाथ में निर्मित बुध्द के धातु अवशेषों से सम्पन्पन धर्मराजिका बुद्व स्तूप को अपनी हवेली निर्माण के लियें काशी के राजा ने तुडवा लिया था तथा स्तूप में प्राप्त बुध्द के पवित्र अस्थिअवशषों को गंगा में फिकवा दिया था एवं कुशीनगर स्थित प्राचीन रामभार बौध्द स्तूप से उपर की ईटों को निकालकर समीप के सिसवामहन्थ हिन्दू मन्दिर एवं उसकी चाहर दीवार का निर्माण करा दिया गया था । इसलियें कुशीनगर का प्राचीन बुद्व स्तूप आज भी भग्नावस्था में विद्यमान है। पुरातत्व ज्ञान से शून्य हृदयहीन दि बृजफाउन्डेशन संस्था ने प्राचीन रामताल पुष्करणी का पचास प्रतिशत सत्यानाश तो कर ही दिया है। (छाया चित्र संलग्न) एवं आगे उसका विध्वंस अभी भी जारी है।

ग्राम रामताल की साझा प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर रामताल पुष्करणी को हथियाने की मंशा से दि बृजफाउन्डेशन संस्था पुष्करणी भूमि की तारबाउन्ड्री कर उसके अन्दर आवास बना कर गेट चढाने की येाजना है। यदि जलाशय की तारबाउन्ड्री करके उसपर गेट चढा दिया गया तो ग्राम रामताल सहित आसपास के ग्रामों का पशुधन उसमें पानी नही पी सकेगा, न उसमें चरवाहे ग्वाल–बाल स्नान कर सकेगें, न तरूण ग्वाल–बाल वट वृक्ष पर चड. कूद कर गुल्ली दण्डा का खेल खेल सकेगें, न वहाँ से गरीब महिलाऐं पुशुधन का गोबर एकत्रित कर उपले बना बेचकर अपना पेट पाल सकेगी, न गाँव–गाँव

के मध्य होने वाले विवादित मसलों का निस्तरण ग्रामवासी सार्वजनिक रूप से इस भूमि पर पंचायत कर निस्तारण कर पायेगे, न ही जाने अनजाने साधक इसमें स्नान के पश्चात साधना कर पायेगें। इस प्राकार से दि बृफाउन्डेशन संस्था द्वारा रामताल जलाशय की पहिचान मिटाकर उसे हाथियाये जाने का उपक्रम किया जा रहा है। जो कि भारत सरकार के प्राचीन स्मारक एवं ध्वशावशेष अधिनियम 1958 के अनुसार राष्ट्रीय अपराध है।

जब किसी भी पुरास्थल का पुरातारिवक उत्खननन किया जाता है। तब जे0सी0बी0 जैसी भारी विनाशकारी मशीनों की तो बात छोडिये मानव ताकत से चलाये जाने वाले फावडे गोतियों के प्रयोग से भी पुरातत्वविद वचते हैं। उत्खनन स्क्रेपर (खुर्पी) ब्रस, छोटी हथौडीनुमा एक हाथ से आहिस्ता आहिस्ता सावधानी पुर्वक चलाई जाने वाली गेंती की सहायता से किया जाता है। उसके पश्चात उसे कठोर व मुलायम ब्रुश से साफ किया जाता है। इतने से भी पुरातत्वविद को सन्तोष नही होता है। ब्रश किये गयें स्थान को वह धुटनों और हथेलियों के बल पर अपने शरीर को साध कर अपने मुँह से पशु के थूतने की तरह फूँक मारता है। तथा बार बार फोटो ग्राफी और दस्तावेजीकरण करता है। इसके स्थान पर बृजफाउडेन्शन द्वारा ठीक वैसे ही जे0सी0बी0 चलवायी जा रही है जैसे वामियान में अफगानी तालीवनियों ने रामताल जलाशय की समकालीन बुध्द प्रस्तर मुर्तियों को बुल्डोजरों, तोपों और बारूद से तहस नहस कर दिया था। इस प्रकार से रामताल का भी दि बृजफाउन्डेशन संस्था द्वारा 50 प्रतिशत विनाश किया जा चुका है।

प्रचीन रामताल जलाशय की विनाश वेदना को देख कर ग्राम रामताल निवासी श्री के0 पी0 सिंह ने दिनाँक–13,01,16 को महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सवेक्षिण नई दिल्ली एवं अधीक्षण पुरातत्वविद, आगरा मण्डल, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण आगरा को, ऐतिहासिह पुरातात्विक, सास्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व के इस स्मारक के बचाव हेतु ई मेल के द्वारा गुहार भी लगाई गई है। (दोनों पत्रों की प्रति संलग्न) इसके बावजूद भी जिला प्रशासन की ओर से और न ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से कोई बचाव कार्य किया गया है। जब कि प्रशासन को सुनते ही बृजफाउन्डेशान द्वारा कराये जा रहे विनाशकार्य पर रोक लगानी चाहियें और भारत सरकार के प्राचीन स्मारक एवं ध्वशावशेष अधिनियम 1958 , के तहत इस गौरवशाली पुरातात्विक धरोहर को सुरक्षित एवं संरक्षित कर दोषियों के विरूद्व शक्त कार्यवाही करनी चाहिऐं।

लेखक का स्वयं का विचार